Sl.No. :

नामांक Roll No.

No. of Questions – 22

No. of Printed Pages – 7

SS–21–Hindi Sah. (Supp.)

उच्च माध्यमिक पूरक परीक्षा, 2024

SENIOR SECONDARY SUPPLEMENTARY EXAMINATION, 2024

हिंदी साहित्य

समय : 3 **घण्टे** 15 **मिनिट**

पूर्णांक : 80

परीक्षार्थियों के लिए सामान्य निर्देश :

1) परीक्षार्थी सर्वप्रथम अपने प्रश्न–पत्र पर नामांक अनिवार्यतः लिखें ।

2) **सभी** प्रश्न हल करने अनिवार्य हैं ।

3) प्रत्येक प्रश्न का उत्तर दी गई उत्तर–पुस्तिका में ही लिखें ।

4) जिन प्रश्नों में आन्तरिक खण्ड हैं, उन सभी के उत्तर एक साथ ही लिखें ।

5) प्रश्न का उत्तर लिखने से पूर्व प्रश्न का क्रमांक अवश्य लिखें ।

यहाँ से काटिए

प्रश्न पत्र को खोलने के लिए यहाँ फाड़ें

यहाँ से काटिए

खण्ड – अ

प्र.1) निम्नलिखित वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उत्तर अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखिए – **[12 × 1 = 12]**

i) विद्यापति के पद के अनुसार प्रियतम गोकुल छोड़कर कहाँ बस गए हैं? **[1]**

अ) द्वारका ब) वृंदावन

स) मधुपुर द) बरसाना

ii) 'मुझ भाग्यहीन की तू संबल' पंक्ति में मुझ शब्द किसके लिए प्रयुक्त हुआ है? **[1]**

अ) सरोज के लिए ब) सरोज की माँ के लिए

स) स्वर्गीया प्रिया के लिए द) निराला के लिए

iii) संवदिया का नाम था – **[1]**

अ) बजरंगी ब) हरगोबिन

स) गोविंद द) मुहम्मद आगा

iv) ''नागर अपभ्रंश से जो शिष्ट लोगों की भाषा विकसित हुई, वह नागरी कहलाई।'' यह किसने कहा? **[1]**

अ) रामचंद्र शुक्ल ने ब) भारतेंदु ने

स) बदरीनारायण चौधरी ने द) बदरीनाथ गौड़ ने

v) 'सूरदास की झोंपड़ी' से रुपये की थैली कौन ले गया? **[1]**

अ) जगधर ब) नायकराम

स) घीसू द) भैंरो

vi) कितने इंच से कम बारिश होने पर सूखे का साल माना जाता है? 'अपना मालवा – खाऊ – उजाड़ू सभ्यता में' पाठ के आधार पर बताइए – **[1]**

अ) 24 इंच से ब) 28 इंच से

स) 27 इंच से द) 26 इंच से

vii) 'बिस्कोहर की माटी' विश्वनाथ त्रिपाठी की आत्मकथा का अंश हैं। इस आत्मकथा का नाम है – **[1]**

अ) कागद – कारे ब) रंगभूमि

स) जमीन पक रही है द) नंगातलाई का गाँव

viii) किस देश की घोषणा है कि वह अपनी खाऊ–उजाड़ू जीवन पद्धति से कोई समझौता नहीं करेगा? **[1]**

अ) अमेरिका ब) अफ्रिका

स) श्रीलंका द) भारत

ix) नाटक का सबसे ज़रूरी और सशक्त माध्यम है – [1]

अ) वेशभूषा ब) लाइट

स) संवाद द) कथाशून्यता

x) सुमित्रानंदन पंत ने कविता के लिए किस प्रकार की भाषा की आवश्यकता पर बल दिया है? [1]

अ) क्लिष्ट भाषा ब) सपाट भाषा

स) संस्कृतनिष्ठ भाषा द) चित्र–भाषा

xi) वो आवाज़ें जो समाचार शूट करते हुए खुद–ब–खुद चली आती है, उन्हें कहते हैं – [1]

अ) एंकर – विजुअल ब) नेट साउंड

स) एंकर बाइट द) एंकर पैकेज

xii) समाचार लेखन की मानक शैली बन गई है – [1]

अ) सीधा पिरामिड शैली ब) इंट्रो शैली

स) फ्रीलांसर शैली द) उलटा पिरामिड शैली

प्र.2) निम्नलिखित रिक्त स्थानों की पूर्ति उचित उत्तर से कीजिए – [6 × 1 = 6]

i) वह काव्य गुण जो चित्त को द्रवित कर उसे आह्लादित कर देता है, वह ………. गुण कहलाता है? [1]

ii) जब कानों को उद्वेगजनक लगने वाले कड़वे शब्दों का प्रयोग हो वहाँ पर ………… दोष होता है। [1]

iii) जहाँ पर्याप्त कारण होने पर भी कार्य न हो वहाँ ………….. अलंकार होता है। [1]

iv) सिय मुख समता पाव किमि। चंद बापुरो रंक। पंक्ति में …………….. अलंकार है। [1]

v) दोहा और रोला छंदो के मेल से …………… छंद बनता है। [1]

vi) छंद में मात्रा गणना करते समय दीर्घ वर्ण की ………. मात्राएँ मानी जाती है। [1]

प्र.3) अपठित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए – [6 × 1 = 6]

आज विश्व में अनेक देश हैं । प्रत्येक देश का अपना एक मूल स्वभाव होता है । उस मूल स्वभाव के अनुसार ही वह जीवन को देखता है, यही उसका जीवन दर्शन कहलाता है । भारत के मनीषियों ने आत्मस्थित होकर जीवन को देखने व समझने का प्रयास किया । तब इन्हें जीवन जैसा दिखाई दिया, वही भारतीय जीवन दर्शन कहलाया । इस जीवन दर्शन के आधार पर व्यक्तिगत, पारिवारिक एवं सामाजिक व्यवहार की पद्धति का शास्त्र बनाया, वही भारतीय संस्कृति है । जीवन के किसी भी स्तर पर किसी भी पहलू का विचार करते समय तथा व्यवस्थाएँ एवं मर्यादाएँ बनाते समय जीवन दर्शन तथा संस्कृति का विचार आधार रुप में रखना आवश्यक है । हमें भारतीय जीवन – दर्शन तथा भारत की सांस्कृतिक महत्ता के प्रति गौरव एवं सम्मान के भाव के साथ-साथ उत्तरदायित्व बोध भी रखना होगा ।

i) भारतीय संस्कृति मुख्यत: किन-किन के व्यवहार की पद्धतियों का शास्त्र है? [1]

ii) हमे भारतीय जीवन – दर्शन एवं संस्कृति के प्रति कौन-कौनसे भाव रखने चाहिए । [1]

iii) क्या करते समय जीवन-दर्शन तथा संस्कृति का विचार आधार रूप में रखना आवश्यक है । [1]

iv) 'आत्मस्थित' शब्द का क्या अभिप्राय है? [1]

v) गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए । [1]

vi) देश का जीवन-दर्शन कैसे विकसित होता है? [1]

प्र.4) अपठित पद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए – [6 × 1 = 6]

है अमानिशा, उगलता गगन घन अंधकार,
खो रहा दिशा का ज्ञान, स्तब्ध है पवन-चार,
अप्रतिहत गरज रहा पीछे अम्बुधि विशाल,
भूधर ज्यों ध्यानमग्न, केवल जलती मशाल ।
स्थिर राघवेन्द्र को हिला रहा फिर-फिर संशय,
रह रह उठता जग जीवन में रावणजय भर
जो नहीं हुआ आज तक हृदय रिपुदम्य श्रांत,
एक भी, अयुत-लक्ष में रहा जो दुराक्रांत,
कल लड़ने को हो रहा विकल वह बार बार,
असमर्थ मानता मन उद्यत हो हार हार ।

i) पद्यांश के अनुसार दिशाओं का ज्ञान क्यों खो रहा है? [1]

ii) 'अप्रतिहत' शब्द का क्या अर्थ है? [1]

iii) राम के मन में क्या संशय व्याप्त हो रहा है? [1]

iv) पद्यांश में 'भूधर' को ध्यानमग्न क्यों कहा है? [1]

v) पद्यांश का मूल भाव लिखिए । [1]

vi) स्थिर राघवेन्द्र का अर्थ स्पष्ट कीजिए । [1]

खण्ड – ब

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर अधिकतम 40 शब्द में लिखिए ।

प्र.5) दीप को पंक्ति को देने की अभिव्यंजना स्पष्ट कीजिए । [2]

प्र.6) 'भरत–राम का प्रेम' पद्यांश में प्रयुक्त ''कबहुँ न कीन्ह मोर मन भंगू'' पंक्ति का अभिप्राय लिखिए । [2]

प्र.7) 'प्रेमधन की छाया स्मृति' पाठ के आधार पर बताइए कि लेखक के पिताजी पुस्तकों को छिपाकर क्यों रखने लगे? [2]

प्र.8) 'ढेले चुन लो' पठित अंश के आधार पर बताइए कि विभिन्न तत्त्वों की मिट्टी चुनने के क्या प्रतीकार्थ है? [2]

प्र.9) सूरदास अपनी आर्थिक हानि क्यों गुप्त रखना चाहता था? [2]

प्र.10) 'बिस्कोहर की माटी' पाठ में लू से बचने के लिए किए जाने वाले उपाय लिखिए । [2]

प्र.11) 'समासोक्ति' अलंकार की परिभाषा उदाहरण सहित लिखिए । [2]

प्र.12) बिंब और छंद का कविता लेखन में क्या प्रभाव होता है? स्पष्ट कीजिए । [2]

प्र.13) विशेष लेखन की भाषा–शैली के संदर्भ में ध्यान रखने योग्य मूल बातें लिखिए । [2]

प्र.14) समाचार के संदर्भ में प्रचलित – लाइव शब्द के अर्थ को स्पष्ट कीजिए । [2]

प्र.15) रघुवीर सहाय का साहित्यिक परिचय लिखिए । [2]

प्र.16) असगर वज़ाहत का साहित्यिक परिचय लिखिए । [2]

खण्ड – स

दीर्घ उत्तरीय प्रश्नः (उत्तर शब्द सीमा लगभग 60 शब्द)

प्र.17) 'कार्नेलिया का गीत' में वर्णित भारत की विशेषताओं का अपने शब्दों में वर्णन कीजिए। **[3]**

अथवा

''घनानंद की कविता प्रेम की पीड़ा की कविता है।'' पठित अंश के आधार पर कथन की समीक्षा कीजिए।

प्र.18) ''विकास की अंधी दौड़ ने पर्यावरण के लिए विकट स्थितियाँ उत्पन्न की है।'' 'जहाँ कोई वापसी नहीं' पाठ के संदर्भ में उक्त कथन की समीक्षा कीजिए। **[3]**

अथवा

'कुटज' वृक्ष की विशेषताएँ लिखिए।

प्र.19) 'सूरदास की झोंपड़ी' पाठ के आधार पर सूरदास की चारित्रिक विशेषताएँ लिखिए। **[4]**

अथवा

'बिस्कोहर की माटी' पाठ में वर्णित बिस्कोहर के प्राकृतिक वैशिष्ट्य को उजागर कीजिए।

खण्ड – द

प्र.20) निम्नलिखित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए। **[5]**

मैं सेवाग्राम में लगभग तीन सप्ताह तक रहा। अकसर ही प्रातः उस टोली के साथ हो लेता। शाम को प्रार्थना सभा में जा पहुँचता, जहाँ सभी आश्रमवासी तथा कस्तूरबा एक ओर को पालथी मारे और दोनों हाथ गोद में रखे बैठी होती और बिलकुल मेरी माँ जैसी लगतीं। उन दिनों एक जापानी 'भिक्षु' अपने चीवर वस्त्रों में गांधी के आश्रम की प्रदक्षिणा करता। लगभग मील भर के घेरे में, बार–बार अपना 'गाँग' बजाता हुआ आगे बढ़ता जाता। गाँग की आवाज हमें दिन में अनेक बार, कभी एक ओर तो कभी दूसरी ओर से सुनाई देती रहती। उसकी प्रदक्षिणा प्रार्थना के वक्त समाप्त होती, जब वह प्रार्थना स्थल पर पहुँचकर बड़े आदरभाव से गांधी जी को प्रणाम करता और एक ओर को बैठ जाता।

अथवा

भीड़ लड़के ने दिल्ली में भी देखी थी, बल्कि रोज़ देखता था। दफ़्तर जाती भीड़, खरीद फ़रोख्त करती भीड़, तमाशा देखती भीड़, सड़क क्रॉस करती भीड़। लेकिन इस भीड़ का अंदाज निराला था। इस भीड़ में एकसूत्रता थी। न यहाँ जाति का महत्त्व था, न भाषा का, महत्त्व उद्देश्य का था और वह सबका समान था, जीवन के प्रति कल्याण की कामना। इस भीड़ में दौड़ नहीं थी, अतिक्रमण नहीं था और भी अनोखी बात यह थी कि कोई भी स्नानार्थी किसी सैलानी आनंद में डुबकी नहीं लगा रहा था। बल्कि स्नान से ज्यादा समय ध्यान में ले रहा था। दूर जलधारा के बीच एक आदमी सूर्य की ओर उन्मुख हाथ जोड़े खड़ा था। उसके चेहरे पर इतना विभोर, विनीत भाव था मानो उसने अपना सारा अहम् त्याग दिया है, उसके अंदर 'स्व' से जनित कोई कुंठा शेष नहीं है वह शुद्ध रूप से चेतनस्वरूप, आत्माराम और निर्मलानंद है।

प्र.21) निम्नलिखित पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या लिखिए । **[5]**

अगहन देवस घटा निसि बाढ़ी । दूभर दुख सो जाइ किमि काढि ।।
अब धनि देवस बिरह भा राति । जरै बिरह ज्यों दीपक बाती ।।
काँपा हिया जनावा सीऊ । तौ पै जाइ होइ सँग पीऊ ।।
घर घर चीर रचा सब का हूँ । मोर रूप रंग लै गा नाहू ।।
पलटि न बहुरा गा जो बिछोई । अब हूँ फिरै फिरै रंग सोई ।।

अथवा

यह धीरे–धीरे होना
धीरे–धीरे होने की सामूहिक लय
दृढ़ता से बाँधे है समूचे शहर को
इस तरह कि कुछ भी गिरता नहीं है
कि हिलता नहीं है कुछ भी
कि जो चीज जहाँ थी
वहीं पर रखी है
कि गंगा वहीं है
कि वहीं पर बँधी है नाव
कि वहीं पर रखी है तुलसीदास की खडाऊँ
सैकड़ों बरस से ।

प्र.22) निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर सारगर्भित निबंध लिखिए । (शब्द सीमा 400 शब्द) **[6]**

अ) संयमित जीवन शैली : स्वस्थ शरीर

ब) बाल विवाह : अमानवीय कृत्य

स) मेरा प्रिय खिलाड़ी

द) सोशल मीडिया : दशा एवं दिशा

⌘⌘⌘

DO NOT WRITE ANYTHING HERE